ARYAVART SHODH VIKAS PATRIKA
RNI TITLED NO. UPBIL04292
RNI REG. NO. UPBIL/2014/66218 PP. No.- 126-127

ISSN NO.-2347-2944 (Print)
e-ISSN NO.-2582-2454 (Online)
Vol.-16, No.- I, Issues-27, YEAR- Jan.-March-2023

बुंदेलखंड परिक्षेत्र में चंदेलों का शासनकाल

1. पूर्णिमा सिंह
2. डॉ0 पूनम मिश्रा

1. शोध अध्येत्री– इतिहास विभाग, 2. प्रोफेसर– इतिहास विभाग, शासकीय ठाकुर रणमत सिंह महाविद्यालय, रीवा (म0प्र0) भारत

Received-23.02.2023, Revised-30.02.2023, Accepted-04.02.2023 E-mail: vishnucktd@gmail.com

सारांशः ***गुर्जर प्रतिहारों के पतन के पश्चात् इस क्षेत्र पर चंदेल वंश के शासकों ने लगभग तीन शताब्दियों तक शासन किया प्रारंम्भ में यह प्रतिहारों के अधीन शासन करते थे, परन्तु जैसे ही उनकी शक्ति क्षीण होना प्रारम्भ हुई, चंदेलों ने स्वतंत्रता पूर्वक शासन करना प्रारम्भ कर दिया प्रथम स्वतंत्र शासक हर्ष देव (910– 930ई.) था, उसका उत्तराअधिकारी यशोवर्मन (930ई.–950ई.) चंदेल वंश का प्रथम प्रतिभाशाली एवं महत्वाकांक्षी शासक था। उसने कलचुरी राजा से कालिंजर का किला जीतकर "कालिंजर पुराधीश्वर" की उपाधि धारण की और कन्नौज के राजा महिपाल के पुत्र देवपाल से एक विष्णु मूर्ति छीनकर खजुराहो में स्थापित की। खुजुराहो के शिलालेखों में उसे अनेक राज्यों का विजेता कहां गया है, परंतु उसकी कालिंजर विजय उन सबमें महत्वपूर्ण है।***

कुंजीभूत शब्द– प्रतिभाशाली, महत्वाकांक्षी शासक, उपाधि धारण, शिलालेखों, आक्रमण, विश्वासपात्र, शक्तिशाली।

यशोवर्मन का पुत्र एवं उसका उत्तराधिकारी धंगदेव (950–1002) इस वंश का सर्वाधिक शक्तिशाली शासक है खजुराहो के लक्ष्मण मंदिर अभिलेख में कहा गया है कि धंग ने खेल–खेल में अपनी विशाल और शक्तिमान भुजाओं से कालिंजर तथा मालवनद नदी के तट पर अवस्थित भास्वत तक यहां से कालिंदी नदी तक तथा चेदिवंश की देश सीमा तक और फिर गोपाद्रि तक, जो चमत्कारों का पर्वत है, विजय प्राप्त की। यद्यपि यह वर्णन पूर्णतः सत्य प्रतीत नही होता है फिर भी इससे यह स्पष्ट हो जाता है कि उसने अनेक कठिन विजयों को प्राप्त किया। जीवन के अंतिम वर्षों में धंगदेव ने भारतीय राजाओं के संघ में सम्मिलित होकर शाही वंशीय राजा जयपाल की, सुबुक्तगीन के आक्रमण के विरूद्ध सहायता दी,जो की उसकी देश प्रेम की भावना को व्यक्त करती है।

धंगदेव के उत्तराधिकारी एवं पुत्र गंडदेव (1003–1025) ने इस भावना को आगे बढाते हुए महमूद गजनवी का सफल प्रतिरोध किया। धंगदेव के बाद विद्याधर, विजयपाल और देव वर्मा शासक हुए जिन्होंने चन्देल सामाज्य की सीमा को स्थिर रखने का प्रयास किया। तत्तपश्चात चन्देल शासक अयोग्य सिद्ध हुए। फलस्वरूप वे पृथ्वीराज चौहान एवं कुतुबुद्दीन ऐबक के आक्रमणों का सामना नही कर सके और उनका साम्राज्य छिन्न भिन्न हो गया।

इस प्रकार हम देखते हैं, कि बुंदेलखंड क्षेत्र के अधिकांश भाग पर चंदेलों ने सीधे या प्रत्यक्ष रूप से शासन किया। गोरे लाल तिवारी का मत है कि चन्देलों का राज्य धसान नदी के पूर्व में और विंध्याचल पर्वत के उत्तर और पश्चिम में था। उत्तर में वह यमुना नदी तक और दक्षिण में केन नदी के उद्गम स्थल तक फैला हुआ था। केन नदी इस क्षेत्र के बीचों बीच बहती थी तथा महोबा व खजुराहो उसके पश्चिम में थे और कालिंजर व अजयगढ़ इसके पूर्व में थे। इस प्रदेश में बाँदा हमीरपुर जिले भी सम्मिलित थे चन्देल राजाओं ने अपनी उन्नति के दिनों में इस प्रान्त की सीमा पश्चिम में वेतवा नदी तक बढ़ा ली थी। इस प्रकार बुंदेलखंड के अधिकांश क्षेत्र पर चन्देलों का प्रत्यक्ष अधिकार था, जबकी अन्य वंश के शासकों द्वारा बुंदेलखंडके इस विस्तृत क्षेत्र पर कभी भी प्रत्यक्ष रूप से शासन नही किया गया था।

चूंकि कीर्ति वर्मा एक वर्ष भी शासन नही कर सका था, अतः परमार्दिदेव राजा बना जो कि अत्यन्त भेरू प्रवृत्ति का राजा था उसने एक भी युद्ध नही लड़ा किन्तु उसके समय के जितने भी युद्ध हुए उनमें आल्हा व ऊदल का योगदान अतुलनीय रहा है। अतः ये दोनो परमर्दिदेव के सबसे विश्वासपात्र सेनापति थे। दीवान प्रतिपाल सिंह अनुसार के बनाफर वंश आल्हा ऊदल की वीरता के कारण ही प्रसिद्व हुआ है।

इनकी लड़ाइयों का विस्तृत विवरण महाकवि जगनिक द्वारा रचित आल्हाखण्ड से प्राप्त होता है, इनका वंश लक्ष्मण जी के दूसरे पुत्र सीतावरण से बताया जाता है। आल्हा व ऊदल दशराज या हशरथ के पुत्र थे, आल्हा का पुत्र ईदंल था जो कि 1161 ई. से 1195 ई. तक रहा जिसके अधिकार में महोबा व सेवदा थे। आल्हा के समय चन्देलों के पास आठ किले थे – बारीगढ़, कालिंजर, अजयगढ़, मनियागढ़, मड़फा, मौदहा, गढ़ा और जबलपुर। राधाकृष्ण बुन्देली के अनुसार " विक्रम संवत 1260 ई. में कुतुबुद्दीन ऐबक ने चन्देल राज्य पर चढ़ाई की जिसमें परिमाल (परिमर्दिदेव) कालिंजर के किले में हार गये और कुतुबुद्दीन के लिए किला छोड़ने को तैयार हो गये। मंत्री ने उसे ऐसा करने के लिए मना किया। न मानने पर मंत्री ने ही उन्हे मार डाला। यह एक बार पुनः सत्य साबित हुआ, कि राजाओं की राजनैतिक उपलब्धियां अल्प कालिक होती है, जबकि सांस्कृतिक उपलब्धियॉ चिर स्थायी और खजुराहो के मन्दिर चीख–चीख कर अपने निर्माताओं की कला प्रियता का गौरवगान कर रहे हैं, को चन्देलकालीन शिल्प कला के केन्द्र खजुराहों को विश्व विरासत की

अनुरूपी लेखक / संयुक्त लेखक

ISSN NO.-2347-2944 (Print)
e-ISSN NO.-2582-2454 (Online)
Vol.-16, No.- I, Issues-27, YEAR- Jan.-March-2023

श्रेणी में शामिल होने का गौरव प्राप्त है।

बुंदेलखंड की सरजमी पर आक्रमण करने वाला पहला मुस्लिम शासक महमूद गजनवी था, जिसने पहला आक्रमण वि.स. 1078 में चन्देल शासक गण्डदेव के समय किया निजामुद्दीन के अनुसार गंडदेव परास्त हुआ किन्तु राधाकृष्ण चौधरी के अनुसार–''कालिंजर के राजा गण्ड की सेना से महमूद गजनवी भयभीत हो गया, परन्तु गण्ड की सेना स्वयं डरकर रात में भाग में खड़ी हुई और महमूद लूटमार कर जल्द ही लौट गया।'' वह कालिंजर से अकूत सम्पत्ति लूटने में सफल रहा।

गजनवी चन्देलों की शक्ति को पूरी तरह से ध्वस्त करने के उद्देश्य से अगले ही वर्ष फिर से कालिंजर पर आक्रमण के लिए अपने घर से प्रस्थान किया तथा मार्ग में पड़ने वाले 'भारत के जिब्राल्टर' नाम से प्रसिद्व किले ग्वालियर को जीतने का प्रयास किया क्योंकि यहाँ का सामन्त चन्देलों का करद सामन्त था, किन्तु किला इतना सुदृढ़ था कि महमूद उस पर अधिकार न कर सका साथ ही वह मार्ग में अधिक विलम्ब नही करना चाहता था, इसलिए उसने ग्वालियर के कछवाह सार्मत से संधि करके कालिंजर की ओर बढ़ा और वहां पहुंच कर किले को घेर लिया, किन्तु दीर्घकालीन घेरे के उपरान्त भी जब उसे सफलता की उम्मीद नही दिखी। तब उसने वहॉ के चंदेल शासक गंडदेव से संधि करली और चन्देल राजा ने 300 हाथी और बहुत सा धन तथा उसकी तारीफ में बहुत से कविताएं भेंट की, जिससे महमूद गजनवी अत्यधिक प्रसन्न हुआ और उसने अन्य राज्यों से जीते हुए किले उसे देकर उसके राज्य में 14 किले और भी बढ़ा दिये, तत्पश्चात लौटते हुए महमूद ने ग्वालियर को पुनः घेरा तथा वहां के कछवाह शासक देवपाल से 35 हाथी और बहुत सा धन लेकर वापस चला गया, इस प्रकार बुंदेलखंड को धनहानि तो अवश्य हुई, किन्तु वह खून–खराबे से बच गया।

1173 ई. में गोर के सुल्तान गियासुद्दीन ने अपने छोटे भाई शाहाबुद्दीन उर्फ मुईजुद्दीन मुहम्मद बिन साम को गजनी का सूबेदार नियुक्त किया जिसने भारत पर अनकों आक्रमण किये। यद्यपि गौरी 1191 ई. में तराइन के प्रथम युद्ध में पृथ्वीराज तृतीय से परास्त हुआ, किन्तु उसने अगले ही वर्ष इसी मैदान में अपनी पूर्व पराजय का बदला ले लिया। यहाँ यह उल्लेखनीय है कि जब गौरी ने भारत पर आक्रमण किया, उस समय गंगा–यमुना दोआब के दक्षिण में स्थित बुंदेलखंड पर चन्देलों का राज्य था जिन्होंने अपने पड़ोसियों–मालवा के परमारों, त्रिपुरी के कलचुरियों और गुजरात के बघेलों (सिद्धराज) को परास्त कर अपने साम्राज्य का चतुर्दिक विस्तार कर साम्राज्य के अनेक शत्रु पैदा कर रखे थे। किला इतना सुदृढ़ था कि उसे बिना दीर्घकालीन घेरे के जीतना असंम्भव था। कुतुबुद्दीन ऐबक मुहम्मद गौरी का खरीदा हुआ एक गुलाम था, जो अत्यधिक वीर पराक्रमी तथा साहसी था तथा गौरी की तरफ से उत्तर भारत के अनेक राजाओं को जीतता हुआ बनारस, चन्दावर, कन्नौज को पद दलित किया और लगभग सम्पूर्ण मध्य भारत पर तुर्कों का अधिकार स्थापित कर दिया, किन्तु केवल एक महत्वपूर्ण राजवंश शेष था, जो अभी तक स्वतंत्र था, वह था –बुंदेलखंड का चन्देश वंश। उसके राज्य की सीमाएँ तुर्की राज्य को छूती थीं। बनारस तथा गहड़वार राज्य के अन्य भागों की विजय के समय से ही साहसी तुर्क नेता चन्देल राज्य की सीमाओं पर धावा मारा करते थे। 1202–03 ई. में कुतुबुददीन ऐबक ने परमर्दिदेव चन्देल की सैनिक राजधानी कालिंजर पर आक्रमण कर दिया। चन्देलों ने यद्यपि वीरता और साहस से युद्ध किया किन्तु तुर्कों की सैनिक अधिकता के कारण उन्हें भागकर किले में शरण लेनी पड़ी और तुर्की ने कालिंजर का दीर्घकालीन घेरा डाल दिया। तब डरपोक एवं कमजोर शासक परमर्दिदेव ने परेशान होकर तुर्को की अधीनता स्वीकार कर ली। किन्तु उसके मंत्रीअजय देव को यह पसन्द नहीं आया, इसीलिए संधि पत्र पर हस्ताक्षर होने से पूर्व ही उसने परमर्दीदेव चन्देल की हत्या कर दी तथा संधि प्रस्ताव वापस लेकर पुनः युद्ध प्रारम्भ कर दिया।

संदर्भ ग्रन्थ सूची

1. त्रिवेदी एस. डॉ. बुंदेलखंड का पुरातत्व पृ.सं. 16.
2. तिवारी गोरेलाल बुंदेलखंड का संक्षिप्त इतिहास–पृ.सं. 84.
3. प्रो0राधाकृष्ण चौधरी–प्राचीन भारत का राजनीतिक एवं सांस्कृतिक इतिहास पृ.सं. 381.
4. भारत का इतिहास (1000–1707) डॉ. आशीर्वादी लाल श्रीवास्तव पृ.सं. 25.
5. श्रीवास्तव आशीर्वादी लाल–भारत का इतिहास (1000 ई. से 1707 ई. तक) पृ.सं. 35.
6. श्रीवास्तव आशीर्वादी लाल–भारत का इतिहास (1000 ई. से 1707 ई. तक) पृ.सं. 36.

*****